क्रूस के सात चमत्कार - संकटग्रस्त परिवार के लिए चिंतन

"मैं और मेरा घराना — हम प्रभु की सेवा करेंगे।" — योशुआ 24:15

क्रूस के चरणों में परिवार : आधुनिक परिवार चुपचाप खून बह रहा है। किसी नाटकीय तबाही से नहीं, बल्कि एक धीमी रिसन से — बातचीत की जगह स्क्रीन ने ले ली है, कोमलता की जगह महत्वाकांक्षा ने, और अपनेपन की जगह व्यस्तता ने। परिवार हमेशा किसी बड़े धमाके से नहीं टूटते — वे उस क्रमिक चुप्पी से टूटते हैं जब लोग एक ही छत के नीचे रहते हुए भी एक-दूसरे से कोसों दूर होते हैं। एकल माता या पिता अदृश्य थकान ढोते हैं; इकलौता बच्चा खिलौना या चीज़ों से भरे घर में बड़ा होता है, पर भाई-बहनों की हँसी और साहचर्य से वंचित रहता है; पति-पत्नी एक बंधक और एक कार्यक्रम से बँधे अजनबी बन जाते हैं। सबसे खतरनाक बात यह है कि आज के कई परिवारों ने पाप की भावना खो दी है — इसलिए नहीं कि वे पुण्यात्मा हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने ईश्वर की भावना खो दी है। जब ईश्वर को ही घर से निकाला जाता है, तो नैतिक दिशा-बोध, बलिदानी प्रेम और संस्कारात्मक प्रतिबद्धता भी चली जाती है — जो परिवार को एकजुट रखती हैं।

इस मौन संकट में, येसु मसीह का क्रूस हृदयस्पर्शी कोमलता के साथ बोलता है। इसके सात चमत्कार कोई अमूर्त धर्मशास्त्र नहीं हैं — वे हमारे युग के घायल परिवार के लिए एक सटीक निदान और एक आमूल उपचार हैं।

1. **चमत्कार 1: ईश्वरीय देह-धारण — ईश्वर हमारी अव्यवस्था में प्रवेश करता है :** पहला चमत्कार यह है कि ईश्वर ने परिवार के पूर्ण होने की प्रतीक्षा नहीं की। मसीह का देहधारण (kenosis), — उनका आत्म-रिक्तीकरण (फिलि 2:6–8) — का अर्थ है कि वे एक मानवीय परिवार में जन्म लिए : निर्धन, विस्थापित, राजनीतिक खतरे में, गलत समझे गए। पवित्र परिवार घरेलू पूर्णता का कोई चित्रपट नहीं था; वह एक शरणार्थी परिवार था, एक मजदूर-माध्यम वर्गीय परिवार था, एक ऐसा परिवार जिसने अपने बारह वर्षीय पुत्र को येरूसालेम में खो दिया था।

संत अगुस्तीन ने लिखा: *"ईश्वर ने हमसे इसलिए प्रेम नहीं किया क्योंकि हम प्रेम के योग्य थे; उसने हमें प्रेम करके प्रेम के योग्य बनाया।"* यही वह वचन है जो हर संघर्षरत परिवार को सुनने की आवश्यकता है। ईश्वर आपके परिवार से यह नहीं माँगता कि वह कार्यात्मक हो जाए, तभी वह प्रवेश करेगा। वह ठीक उसी अव्यवस्था में प्रवेश करता है। जो परिवार अपने आप को बहुत टूटा हुआ, बहुत विचलित, बहुत सांसारिक समझते हैं — ईश्वर ठीक उन्हीं को खोजता है। मेषपालीया निमंत्रण स्पष्ट है: **अपने घर का द्वार मसीह के लिए खोलो** (प्रका 3:20) — झगड़ों के रुकने के बाद नहीं, बल्कि उनके बीच में ही।

2. **चमत्कार 2: बिना शर्त क्षमा — परिवार के घावों का उपचार :** *"हे पिता, इन्हें क्षमा कर; क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं"* (लूकस 23:34)। ये शब्द, उन लोगों पर बोले गए जिन्होंने उन्हें धोखा दिया और छोड़ दिया, उन सभी परिवारों पर भी बोले जाते हैं जो अपने विशेष घावों के इर्द-गिर्द इकट्ठे हैं — वह पिता जो अनुपस्थित रहा, वह माँ जो कठोर थी, वह बच्चा जो भटक गया, वह जीवनसाथी जिसने विश्वास तोड़ा।

समकालीन परिवार का संकट बड़े पैमाने पर क्षमा न करने का संकट है। संत योहन पॉल द्वितीय ने "परिवार में संगति FC (§21) में परिवारिक जीवन की धड़कन के रूप में क्षमा को पहचाना: *"परिवार क्षमा की पहली पाठशाला है।"* फिर भी आज, पाप की भावना नष्ट हो गई है — चिकित्सकीय आत्म-औचित्य और सोशल मीडिया की दोषारोपण की संस्कृति ने उसकी जगह ले ली है — परिवार अब न स्वीकार करते हैं, न मेल-मिलाप करते हैं, न क्रूस के चरणों में एक साथ घुटने टेकते हैं। विक्टर फ्रैंकल ने लिखा कि मनुष्य लगभग किसी भी घाव को सह सकता है यदि उसमें अर्थ पाए। क्रूस हर पारिवारिक घाव को एक मोचनात्मक पता देता है: यह व्यर्थ पीड़ा नहीं है, यह पुनरुत्थान का साधन है। मेषपालिया आह्वान यह है कि **घरेलू मेल-मिलाप के संस्कार** को पुनर्स्थापित किया जाए — वह दैनिक, सादा अभ्यास जो कहता है: *"मैं गलत था। मुझे क्षमा करो।"*

3. **चमत्कार 3 : नया विधान — घरेलू कलीसिया के रूप में परिवार :** क्रूस एक नया विधान का शुरुवात करता है (1 कुरि 11:25) — और परिवार वह विशेषाधिकार प्राप्त स्थान है जहाँ यह प्रतिज्ञा प्रतिदिन जी जाती है। द्वितीय वतिकन के अनुसार कलीसिया एक अत्यंत सुंदर स्थान है : परिवार "घरेलू कलीसिया" (Ecclesia Domestica)। घर केवल वह स्थान नहीं है जहाँ ईसाई रहते हैं; यह वह स्थान है जहाँ कलीसिया साँस लेती है।

फिर भी घरेलू कलीसिया पर आक्रमण हो रहा है। मोबाइल फोन नए वेदी बन गए हैं — नाश्ते पर, रात के खाने पर, बिस्तर पर उनकी पूजा होती है। उत्कृष्टता, धन और शैक्षणिक प्रदर्शन नई त्रिमूर्ति बन गए हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की जगह आज परिवार में नहीं है। संत पिता फ्राँसिस "प्रेम का आनन्द" AL (§276) में चेतावनी देते हैं: *"हम पवित्रता के उस मार्ग को प्रोत्साहित नहीं कर सकते जो किसी के पूरे जीवन को नहीं भरता।"* जब पारिवारिक प्रार्थना लुप्त हो जाती है, जब रविवार का मिस्सा रविवारीय खेल या शैक्षणिक ट्यूशन या नृत्य कक्षा को रास्ता दे देती है, तो पारिवारिक जीवन की संस्करात्मक संरचना चुपचाप ढह जाती है। क्रूस परिवारों को **प्रतिज्ञा -चेतना** की ओर वापस बुलाता है — वह क्रांतिकारी प्रति-सांस्कृतिक विश्वास कि यह परिवार, यह विवाह, यह माता-पिता और बच्चे का बंधन ईश्वर की ओर से एक पवित्र और अनुल्लंघनीय उपहार है।

4. **चमत्कार 4 : मोचनात्मक पीड़ा — घायल माता-पिता के लिए अर्थ :** *"मैं उसकी देह अर्थात् कलीसिया के लिए अपनी देह में मसीह के क्लेशों की घटी को पूरा करता हूँ"* (कोलो 1:24)। वह एकल माँ जो दोहरी पाली में काम करती है, वह पिता जो अपने बच्चों से अलग हो गया है, वह माँ या पिता जो काम के लिए दूर किसी स्थान पर अपने बच्चों को पीछे छोड़ जाते हैं, वह दंपति जो अपने घर में निःसंतानता या लत के मौन दुःख को ढोते हैं — ये क्रूस के बाहर नहीं हैं; वे उसके भीतर हैं।

फिर भी एक विशेष घाव है जो और भी गहरा काटता है और जिसे व्याख्यान-मंच से शायद ही कभी नाम दिया जाता है: आज बहुत से घरों में, माता-पिता घटकर — या खुद को घटने देकर — अपने बच्चों के लिए महज एटीएम मशीन और क्रेडिट कार्ड बन गए हैं। वे हर भौतिक सुख-सुविधा, हर गैजेट, हर फीस प्रदान करते हैं, फिर भी भावनात्मक रूप से अनुपस्थित, आत्मिक रूप से अदृश्य, और उन्हीं बच्चों से संबंधात्मक रूप से अपरिचित रहते हैं जिनके लिए वे इतना बलिदान करते हैं। बच्चे को माता-पिता का धन मिलता है, पर माता-पिता की उपस्थिति, प्रार्थना और प्रेम से वंचित रहता है। यह उदारता नहीं है — यह प्रावधान की भाषा में लिपटा परित्याग का एक परिष्कृत रूप है।

संत योहन पॉल द्वितीय का *Salvifici Doloris* सिखाता है कि मसीह के साथ जोड़ी गई पीड़ा मुक्तिदायी बन जाती है — केवल सही नहीं जाती, बल्कि रूपांतरित हो जाती है। यहाँ मनो-आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि गहन है: **निरर्थक पीड़ा नष्ट करती है; सार्थक पीड़ा गढ़ती है।** कठिनाई में पड़े परिवारों को अपनी पीड़ा हटाने की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी उसे मुक्त किए जाने की। मेषपालीया कार्य यह है कि पीड़ित परिवारों को उनका क्रूस नाम देने में, उसे सचेत रूप से उठाने में, और यह विश्वास करने में सहायता की जाए कि दूसरी ओर का पास्का की सुबह वास्तविक है। उस माता-पिता के लिए जिसने वित्तीय प्रावधान की वेदी पर समय, उपस्थिति और संबंध की बलि दी है — क्रूस निंदा नहीं बल्कि एक नया आह्वान प्रदान करता है: केवल वह मत दो जो बटुए में है, बल्कि वह भी दो जो हृदय में है।

5. **चमत्कार 5 : त्रिएकात्मक प्रेम — ईश्वर के प्रतिरूप के रूप में परिवार :** त्रिएकता मूल परिवार है — आत्म-समर्पण करने वाले प्रेम की एक ही सहभागिता में तीन व्यक्ति। क्रूस ईश्वर के अत्यंत आंतरिक जीवन को प्रकट करता है: पिता का भेजने वाला प्रेम, पुत्र का समर्पित प्रेम, और पवित्र आत्मा उनके बीच का प्रेम। संत योहन पॉल द्वितीय *परिवारों को पत्र* (§6) में घोषणा करते हैं: *"ईश्वर अपनी गहनतम रहस्य में एकाकीपन नहीं, बल्कि एक परिवार है।"*

इसका अर्थ यह है कि हर परिवार — चाहे वह कितना भी टूटा हुआ हो — अपनी संरचना में ही दिव्यता का एक प्रतिरूप समेटे हुए है। किन्तु व्यक्तिवाद से तबाह परिवार, एकल-बच्चे के परिवारों की एकाकीता से, स्क्रीन और करियर में मग्न माता-पिता से — इस प्रतिरूप को दबा दिया गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि त्रिएकात्मक रहस्य यह प्रकट करता है कि ईश्वर के व्यक्तियों को जो परिभाषित करता है वह यह नहीं कि उनके पास क्या है, बल्कि यह है कि वे कैसे संबंधित हैं। पिता केवल अधिकार से परिभाषित नहीं है, न पुत्र/पुत्री केवल आज्ञाकारिता से — वे उस प्रेम से परिभाषित होते हैं जो उनके बीच निरंतर प्रवाहित होता है। इसी प्रकार,

एक माता-पिता को यह परिभाषित नहीं करता कि वे आर्थिक रूप से क्या प्रदान करते हैं, बल्कि वह प्रेम जो वे समय, ध्यान और उपस्थिति में उँडेलते हैं। जब माता-पिता केवल प्रदाता बन जाते हैं और बच्चा केवल लाभार्थी, तो परिवार त्रिएकता का प्रतिरूप बनाना बंद कर देता है और एक लेन-देन का प्रतिरूप बनने लगता है। क्रूस परिवारों को **संबंधात्मक रूपांतरण** की ओर बुलाता है: फोन रखो और बच्चे की आँखों में देखो; कुशल भोजन की जगह साझा भोजन चुनो; यह पुनः खोजो कि परिवार की मेज एक यूखरिस्त का स्थान है।

6. **चमत्कार 6: मृत्यु पर विजय — टूटे परिवारों के लिए आशा :** *"हे मृत्यु, तेरी जीत कहाँ है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है?"* (1 कुरि 15:55)। बहुत से परिवार महसूस करते हैं कि वे पहले ही मर चुके हैं — तलाक, अलगाव, लत या शोक के माध्यम से। पुनरुत्थान के बिना क्रूस त्रासदी है; किन्तु पुनरुत्थान के द्वार के रूप में क्रूस कलीसिया की सबसे जरूरी मेष पालीय घोषणा है। संत पिता बेनेडिक्ट XVI ने लिखा: *"मसीह मृत्यु को दीवार से दरवाजे में बदल देता है।"* यह वचन उस तलाकशुदा माता-पिता के लिए है जो मानता है कि पारिवारिक स्वप्न स्थायी रूप से मर गया है; उस उड़ाऊ पुत्र के लिए जो मानता है कि मेल-मिलाप असंभव है; उस दंपति के लिए जो अलगाव की कगार पर है और साथ के भविष्य की कल्पना नहीं कर सकता। **पुनरुत्थान क्रूस को रद्द नहीं करता — वह उसके भीतर से गुज़रता है।** कोई भी पारिवारिक स्थिति ईश्वर की नवीनीकरण क्षमता से परे नहीं है, बशर्ते कि हमने जो आत्म-सुरक्षात्मक दीवारें बनाई हैं उन्हें गिराने की तत्परता हो। आशा आशावाद नहीं है; यह वह ईश्वरशास्त्रीय गुण है जो जमी हुई ज़मीन में बीज बोता है।

7. **चमत्कार 7 : सार्वभौमिक मेल-मिलाप — टूटे परिवार का पुनर्निर्माण :** क्रूसित मसीह की फैली हुई बाहें मेल-मिलाप की रेखागणित हैं — ऊर्ध्वाधर (ईश्वर और परिवार) और क्षैतिज (माता-पिता और बच्चे, आपस में जीवनसाथी, घावों के पार भाई-बहन)। *"ईश्वर मसीह में था, जगत का अपने साथ मेल कराता हुआ"* (2 कुरि 5:19)। क्रूस *"शत्रुता की बाधक दीवार"* को नष्ट करता है (एफ़े 2:14) — कार्यव्यसनी पिता और अकेले बच्चे के बीच की दीवार; थकी हुई माँ और नाराज किशोर के बीच की दीवार; उन जीवनसाथियों के बीच जो प्रेमी की बजाय सह-प्रबंधक बन गए हैं। डेसमंड टूटू ने मेल-मिलाप पर विचार करते हुए देखा कि इसके लिए एक *तीसरे पक्ष* की आवश्यकता होती है जो दोनों पक्षों की टूट को अपने में समाहित करे। मसीह ठीक यही तीसरा पक्ष है हर टूटे परिवार में। *"प्रेम का आनन्द"* (§312) कोमलता से पुष्टि करती है कि कलीसिया घायल परिवारों के साथ निंदा नहीं बल्कि क्रूस की दया के साथ चलती है।

अंतिम आह्वान: अपने परिवार को क्रूस के चरणों में लाओ

क्रूस के सात चमत्कार आज के परिवार के सात घावों के सात औषधि हैं। पापहीनता की सुन्न करने वाली भावना के विरुद्ध — क्षमा का चमत्कार। एकाकीपन के विरुद्ध — त्रिएकात्मक सहभागिता का चमत्कार। निरर्थक पीड़ा के विरुद्ध — मोचनात्मक प्रेम का चमत्कार। इस भय के विरुद्ध कि बहुत देर हो चुकी है — पुनरुत्थान का चमत्कार। धन और उपलब्धि की मूर्ति के विरुद्ध — केनोटिक आत्म-समर्पण का चमत्कार। बंधनों के टूटने के विरुद्ध — विधान का चमत्कार। निराशा के विरुद्ध — सार्वभौमिक मेल-मिलाप का चमत्कार।

परिवार कोई समाजशास्त्रीय इकाई नहीं है। यह, जैसा कलीसिया ने सदा सिखाया है, *कलीसिया का मार्ग* है — प्रेम की वह अपरिहार्य पाठशाला जहाँ हर पीढ़ी या तो मानवीय होना सीखती है या भूल जाती है। परिवार अपने घावों, अपनी चुप्पियों, अपनी स्क्रीनों और अपनी थकान को क्रूस के चरणों में लाएँ। क्योंकि वहाँ, जैसे मरियम खड़ी रहीं और नहीं भागीं (योहन 19:25), हम भी खड़े होने के लिए आमंत्रित हैं — और यह जानने के लिए कि क्रूस परिवार की कहानी का अंत नहीं है, बल्कि उसकी सबसे गौरवशाली शुरुआत है।

"जो परिवार मिलकर प्रार्थना करता है, वह एकजुट रहता है।" —पैट्रिक पेटन

FR. VALERIAN LOBO/JAMSHEDPUR DIOCESE/9113782481